International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588; Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 1; Issue 7; September 2016; Page No. 18-20

उषा प्रियंवदा के उपन्यास 'रूकोगी नहीं राधिका' में आधुनिक नारी का बदलता दृष्टिकोण

डॉ0 रेनू आनन्द

पीएचडी – नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

उषा प्रियंवदा का जन्मस्थान कानपुर है, उषा प्रियंवदा ने अंग्रेजी साहित्य में बी. ए. और पी. एच. डी. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से किया। सन् 1961 में उन्हें फुलब्रैट स्कालरशिप मिली और अमेरिकी और अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन करने के लिए वे संयुक्त राष्ट्र अमेरिका गयीं और तबसे वहीं रहती हैं।

'रूकोगी नहीं राधिका' में अस्मिता की तलाश करने वाली नारी को अंकित किया गया है।स्वयं उषा प्रियंवदा ही संकेत देती है कि ''राधिका की कहानी यथार्थ जीवन की कथा है जिसमें मुख्य भूमिका निभाने वाली राधिका लेखिका की एक बन्धु है।'' रूकोगी नहीं राधिका में आधुनिक नारी के अन्तरद्वन्दों को बड़ी शूक्ष्मता में कुदेरा गया है। राधिका की कथा एक ऐसी स्त्री की कथा है जो अपने में ही उलझ गई और अपनी खोज में अपने ही भीतर बैठकर यात्रा कर रही है। विदेश में वह अपने परिवेश के प्रति व्यग्रता अनुभव करती है। वहां वह स्वयं को एक सांस्कृतिक शून्य में पाती है। नये संबन्धों के बावजूद उसका अजनबीपन बढ़ता जाता है। वह अपने घर–परिवार व देश, अपने लोगों के बीच लौटना चाहती है। अपने पिता के पास लौटना चाहती है, जिनसे उसे गहरा लगाव है। वह लौटती है किन्तु विभाजित व्यक्तित्व के साथ इस परिवेश में आकर जिस प्रकार उसका मोह भंग होता है, उससे उसका मानसिक द्वंद्व और बढ़ता ही जाता है। इस मोह भंग के मूल कारण उसके भावनात्मक लगाओं में ही निहित है। महादेवी वर्मा की राय में ''चाहे हिन्दु नारी की गौरव गाथा से आकाश गूंज रहा हो, चाहे उसके पतन से पाताल कांप रहा हो, उसके लिए न सावन सूखा न भादों हरा की कहावत चरितार्थ होती रही। उसे हिमालय को जला देने वाले उत्कर्ष और समुद्र तल की गहराई से स्पर्धा करने वाले अपकर्ष दोनों का इतिहास आंसूओं से ही लिखना पड़ा है।''1 इस तरह नारी जीवन की इन स्थितियों का शूक्ष्म अंकन इस उपन्यास में हुआ है।

'रूकोगी नहीं राधिका' में आधुनिक नारी की जटिल मानसिकता, भटकाव, पीड़ा, विद्रोह आदि का चित्रण हुआ है। राधिका अपने व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती है। लीक पकड़कर चलना उसे स्वीकार नहीं है। राधिका किसी पुरूष के लिए श्रंखला में एक कड़ी नहीं बनना चाहती, वह एक छत्र साम्रज्ञी बनना चाहती है। सम्पूर्ण उपन्यास में राधिका जीवन में कई बार उतार–चढ़ाव देखती है लेकिन निर्णय हमेशा अपना लेती है, किसी के बन्धन को स्वीकार नहीं करती है।

राधिका का इलेक्ट्रा कांप्लेक्सः– राधिका के जीवन में आनेवाली इन तमाम हलचलों और परिवर्तनों का मूल कारण उसका अपने पापा से अतिरिक्त लगाव है। इस ओर डैन संकेत भी करता है कि ''पिता के प्रति तुम्हारा लगाव बहुत कुछ एबनार्मल है यदि भारतीय परिवेश में तुम्हें प्रारंभ से ही युवा मित्र बनाने की सुविधा होती तो ऐसा न होता।'' इसे ही विद्या 'इलेक्ट्रा काम्प्लेक्स' कहती है।

राधिका के पापा का जीवन के प्रति दृष्टिकोण बहुत उदार और सुलझा हुआ है एक व्यक्ति के पूरे विकास में दृढ़ विश्वास रखते हैं इसीलिए राधिका को भी वे पूरी स्वतंत्रता देते हैं। वह पूरे नगर में स्वच्छन्द वायु के झोंको की तरह डोलती–फिरती है किन्तु राधिका के व्यक्तित्व में अपने पापा के प्रति अतिरिक्त लगाव एक विचित्र रूप ग्रहण करता है। वह सोचती है कि वही उनके पूरे जीवन की धुरी है। उनके खाली क्षणों की संगिनी उसके बाद उनका पढ़ना लिखना है इसीलिए वह पापा का विद्या से विवाह करना स्वीकार नहीं कर पाती। वह सोचती है कि पापा के जीवन में नई पत्नी के लिए स्थान ही कहां है उसे यही बात बार–बार कचोटती है और उसे लगता है कि पापा ने विद्या को स्थान देने के लिए ही उसे अपने जीवन से हटाया हैं इसकी प्रतिक्रया में ही पापा से प्रतिशोध लेने के लिए वह अमेरिका जाने का निश्चय करती है।

वह विद्या से भी इसीलिए खिंची–खिंची रहती है। रात्रि के प्रथम पहर में पापा की स्टडी में काम करते हुए उसे यह भली–भांति ज्ञात रहता है कि विद्या अपने कमरे में अकेली है और इसलिए उसे थोड़ा सा सुख भी मिलता है। पापा के प्रति विद्रोह के मूल में भी उसका यही भाव है। डैन के साथ अमेरिका जाने का उसका निर्णय सुनकर पापा यह कहते हैं कि मूर्खता और अज्ञानता में वह अपना जीवन नष्ट कर लेगी। पापा की ये बातें सुनकर राधिका तिलमिला उठती है। उसके मन में विद्रोह भर उठता है। पापा की कोई बात कोई सेंटीमेंट उसको छू नहीं पाता वह बुदबुदाती हुई कहती है– ''अब आपने भी जान लिया कि डेढ़ वर्ष पहले विद्या से जब आपने विवाह कर लिया था जब से मुझे कैसा लगता रहा है'' और फिर वह डैन के साथ जाने का दृढ़ निश्चय कर लेती है। इस तरह उसकी स्वतंत्रता और पिता से विद्रोह का मूल कारण उसका उनके प्रति तीव्र संवेदात्मक लगाव रखना ही है। पापा के प्रति राधिका के गहरे लगाव की ओर डैन भी संकेत करता है। जब राधिका यह कहती है कि मुझे युवा पुरूष बहुत अपरिपक्व लगते हैं तो डैन इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि राधिका प्रत्येक में अपने पिता की सी मानसिक प्रौढ़ता ढूंढ़ती है। वह यह भी कहता है कि राधिका उसके साथ इतनी फ्री इसलिए है क्योंकि वह उसमें कहीं अपने पिता का प्रतिबिम्ब पाती है।

स्वतंत्रता–भाव– राधिका का पिता से विद्रोह करके अमेरिका जाना पीढ़ियों के दृष्टिकोण में अन्तर के कारण नहीं है बल्कि यह उसकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता की लड़ाई है जो हर आधुनिक नारी चाहती है। लीक पकड़ कर न चलना उसने अपने पापा से ही सीखा है। इसलिए अमेरिका से लौटने के बाद विवाह करने का पापा का सुझाव सुनकर वह बिफर उठती है– ''जो आप चाहते हैं वही हमेशा क्यों हो क्या मेरी इच्छा कुछ भी नहीं है?'' वह जानती है कि पापा स्त्रियों का आदर करते हैं उन्हें स्वतंत्रता भी देते हैं पर वहीं तक जहां तक उनके द्वारा निर्मित सीमा रेखा न लांघी जाए।''जो आप चाहते हैं वहीं हमेशा क्यों हो? क्या मेरी इच्छा कुछ भी नहीं है? मैं आपकी बेटी हूं, यह ठीक है, पर अब मैं बड़ी हो चुकी हूं और मैं जो चाहूंगी वही करूंगी''2 इसलिए वह सोचती है कि पापा ने जब अपने लिए राह चुन ली तो वह क्यों नहीं स्वतंत्र निर्मम हो अपने लिए राह खोज ले।''अब मैं आप लोंगो के साथ नहीं रहूंगी।''3 स्वतंत्रता की यह झटपटाहट वह उस समय भी अनुभव करती है। जब डैन उसे मुक्त करता है जैसे पापा के घर

से चली आयी थी उसी प्रकार उसने डैन को भी छोड़ दिया। डैन के घर से चले आने पर राधिका के मन में यही भाव उठा कि 'लो मैं ही तुम्हे छोड़कर जा रही हूं।'

भारत लौटने पर जो घुटन और ऊब उसे अपने परिवार में झेलनी पड़ती है उससे मुक्त होने की आकांक्षा के लिए ही वह पुनः दिल्ली लौट आती है। वहां अक्षय और मनीष के आकर्षण के बीच भी तमाम अन्तर्द्वन्द्वों से जूझती रहती है। अंत में वह अपने व्यक्तित्व का विश्लेषण करते हुए सोचती है कि उन कुछ वर्षों में उसमें बचपना, भाव–वेग, और उग्रता थी। पापा को छोड़कर डैन के संग रहते हुए राधिका में कई वर्षों का अनुभव पकापन आ गया था और तभी डैन से अलग होने का साहस उसमें आया था। अब वह स्वतंत्र है, परिपक्व भी अपना जीवन और अपना भविष्य वह स्वयं गढ़ सकती है इस तरह राधिका के व्यक्तित्व में आधुनिक नारी की स्वतंत्र व्यक्तित्व की छटपटाहट भी है और स्वतंत्र व्यक्तित्व गढ़ने की संघर्ष क्षमता भी।

सांस्कृतिक शून्य का अनुभवः–स्वातंत्र्य की चाह में राधिका अमेरिका चली तो जाती है लेकिन वहां रहते हुए वह बार–बार सोचती है कि अपने जीवन के सारे सन्दर्भों से कटकर कोई कितने दिन संतुष्ट रह सकता है। विदेश में उसे अपने प्रियजन, भारतीय त्योहार, यहां का बदलता मौसम के साथ–साथ छोटी–छोटी चींज़ों की स्मृति भी आती है। यद्यपि वह डैन से अलग होकर संस्कृत की सहायक शिक्षिका बन जाती है और साथ–साथ एम. ए. भी करती है लेकिन वहां का पूरा परिवेश उसे इतना असहायक लगने लगता है कि वह यह सोचने पर विवश हो जाती है कि जब तकवह भारत नहीं लौटेगी तब तक उसे शांति नहीं मिलेगी। भारतीय परिवेश से कटने की पीड़ा उसमें एक ऐसा सांस्कृतिक शून्य भर देती है कि वह वहां रहते हुए भी वहां का अंग नहीं बन पाती।''राधिका दो संस्कृतियों के पाटों में पिसकर अनिर्णय और अकेलेपन को झेलती है। वह दोनों संस्कृतियों विदेशी और देशी में मिसफिट होकर रह जाती है।''4

अमेरिका का आकर्षण छोड़कर राधिका अपने मूल भारतीय परिवेश में लौट आती है लेकिन यहां आकर वह बेहद हताश अनुभव करती है। उसे यह पूरा विश्वास था कि पापा उसे लेने एअरपोर्ट अवश्य आयेंगे लेकिन उससे मिलने कोई भी अत्मीय नहीं आता। यद्यपि वह जानती थी कि उसके आचरण से पापा को दुख हुआ होगा पर वे इतने कठोर बन जायेंगे, इसका उसे विश्वास नहीं था। इसीलिए लौटते समय उसने पापा के नाम केबल ही दिया था। वह सोचती है कि यदि किसी कारण से पापा नहीं आए तो बड़े भाई विनय, भाभी, उनके बच्चे वीणा या विवेक कोई भी आ सकता था लेकिन किसी ने भी यह ज़रूरत नहीं महसूस की। जिस लगाव और आकर्षण के कारण वह पापा के पास लौटने या विद्या से बिना झगड़ा किये अपने बिखरे सूत्र समेटने का निश्चय करती है, यहां लोगों का व्यवहार देखकर उसकी यह भावना भी बुझने लगती है। थोड़ा अपनापन राज्जू मामा से मिलता है लेकिन विद्या का निरपेक्ष व्यवहार और पापा की असहायता देखकर उसकी तिलमिलाहट और टीस और बढ़ जाती है। उस परिवेश में उसे सबकुछ भारी–भारी सा लगने लगता है अतः वह दिल्ली वापस लौट आती है।

राधिका का रंग रूप और पहनावा पूर्णतः भारतीय है। उसका शील, नम्रता, व्यक्तित्व जनित है न कि भारतीय नारी को ऐसा होना चाहिए इस कारण उसमें कृत्रिम नहीं है, इसीलिए वह अक्षय को आकर्षित करती है लेकिन अक्षय उसे चाहते हुए भी तमाम कोशिशों के बावजूद उसके संपूर्ण अतीत के साथ स्वीकार नहीं कर पाता। मनीष उसे चाहता है लेकिन राधिका जानती है कि मनीष स्त्रियों से बहुत जल्दी ऊब जाता है। वास्तव में राधिका ऐसा संगी चाहती है जिसमें स्थिरता हो औदार्य हो और जो उसे उसके सारे अवगुणों के साथ स्वीकार कर ले उसके अतीत को झेल लें।

वह जिस भारतीय परिवेश के आकर्षण में यहां आती है वहां भी उसे सोफिस्टिकेशन का मुखौटा पहने एक विशेष प्रकार का आचरण करने वाले लोग ही मिलते हैं, जो यहां के जीवन से ऊबे हुए और असंतुष्ट हैं। दिवाकर असंतुष्ट भारतीय संघ का प्रधान है उसकी व्यथा यह है कि उसकी बीवी अपने देश के त्याग करने की प्रेरणा देते हुए अपने देश में ही रहने को कहती है जबकि उसे लगता है कि इस देश में क्या है? उसके कालेज में काम लायक लैब नहीं है। बच्चों को अच्छे स्कूल में दाखिला नहीं मिल रहा है और एक स्कूटर खरीदने के लिए बरसों इंतेजार करना पड़ रहा है। प्रवीण के बच्चों को अंग्रेजी छोड़कर कोई और भाषा ही नहीं आती। ऐसे परिवेश में राधिका अनिश्चित्ता सारहीनता अनुभव करती है उसका परिवार, उसका परिवेश और उसके जीवन की अर्थहीनता उसे निरंतर परेशान करती है मनीष इसे ही रिवर्स कल्चरल शॉक कहता है वह बताता है कि जब हम अपना देश छोड़कर बाहर जाते हैं तो पहले छः महीने हम एक कल्चरल शॉक के दौरान बिताते हैं। जबकि हर कदम पर हमें अपना देश, अपनी संस्कृति ऊंची दिखाई देती है फिर हम उस देश में रहने के आदी हो जाते हैं। दो ढाई साल उस नए देश में रहकर उसके रीतिरिवाज के आदि होकर हम अपने देश में वापस आते हैं तो हमें एक धक्का दुबारा लगता है, जिसे वो रिवर्स कल्चरल शॉक कहता है।

राधिका भीड़–भाड़ और चहल–पहल से एकदम कटी रहती है वह अपने परिवेश का भाग नहीं बन पाती। यहां रहते हुए भी वह निर्वासित महसूस करती है उसे अपना जीवन निरूद्देश्य यात्रा लगता है दो वर्ष पहले भी ऐसे बोध ने उसे काफी विचलित किया था पर वहां एक भिन्न परिवेश था एक भिन्न संस्कृति थी। वहां रहकर पृथकता अनुभव करना सहज स्वाभात्मक था जब उसे लगता था कि स्वदेश लौटकर अपनेस्वजनों के बीच शायद उसके भीतर का यह हिमखंड पिघल जायेगा लेकिन ऐसा संभव नहीं होता वह मशीनी भाव से अपने जीवन की क्रियाएं करती जाती है लेकिन उसके मन की अकुलाहट और ऊब बढ़ती जाती है। बड़दा के यहां जाकर उसकी यह अकुलाहट और अधिक अनुभव होने लगती है। भाभी उसे कल्ब ले जाती है तो अमेरिका से लौटी हुई ननद के गर्व से अपने मित्रों से मिलती हैं। राधिका को लगता है कि भाभी के लिए वह उसी सम्पन्नता की परिचायक है जैसे बड़दा के लिए पोर्च में खड़ी इंपोर्टेड गाड़ी। वहां की सम्पन्नता और वैभव के बीच वह अजीब अकुलाहट से भरी रहती है। इसीलिए वह वहां से निकल भागना चाहती है।

राधिका का विवाह संबंधी जो धारणा है वह ऐसा संगी चाहती है जिसमें स्थिरता हो, औदार्य हो, जो सारे अवगुणों सहित उसे स्वीकर कर ले उसके अतीत को झेल ले वह जानती है कि पुरूषहीन जीवन में एक उकताहट होती है पर साथ ही एक निश्चित्ता भी रहती है जो उसे काफी सुखद लगती है। अक्षय के प्रति वह आकर्षित होती है क्योंकि उसमें उसे वही स्थायित्व दिखाई देता है। मनीष जल्दी ही स्त्रियों से थक जाता है इसीलिए वह किसी पुरूष के लिए श्रृंखला में एक कड़ी नहीं बनना चाहती। वह एक छत्र साम्राजी बनना चाहती है जो उसे केवल अक्षय के साथ संभव लगता है।''मैं नहीं चाहती कि जल्दबाज़ी में तुम अपने को कमिट करो अक्षय।''5 यह अलग बात है कि अक्षय उसे उसके अतीत के साथ स्वीकार नहीं कर पाता।

निष्कर्ष

इस तरह राधिका के माध्यम से उपन्यासकार ने आधुनिक नारी की विडंबनापूर्ण स्थितियों के साथ–साथ उसकी स्वतंत्रता की ललक और भिन्न संस्कृतियों के आकर्षण में अपने परिवेश के प्रति लगाव–अलगाव और मोहभंग को बखूबी उभारा है। नारी जीवन की

विसंगतियों के विविध आयाम का अनुभूति की गहराई तक ढालने का प्रयास इन्होंने अपनी रचनाओं में किया है। स्वातंत्र्योत्तर नारी की छटपटाहट और संघर्ष को इन्होंने अपनी रचनाओं में विभिन्न कोणो से व्यक्त किया है। नारी जीवन के प्रति पराम्परागत रूढ़ियों और अन्धविश्वास पर उनका विश्वास नहीं है। उषा प्रियंबदा ने नए मूल्यों का निर्माण कर नई दिशा में समाज को मोड़ने का भरपूर प्रयत्न किया है।

संदर्भ ग्रंथ

1. श्रंखला की कड़िया– महादेवी वर्मा–पृ0–39।
2. रूकोगी नहीं राधिका–उषा प्रियंबदा–पृ0 51।
3. रूकोगी नहीं राधिका–उषा प्रियंवदा–पृ0 47।
4. आधुनिक हिन्दी उपन्यास– डा. नरेन्द्र मोहन–पृ0 47।
5. रूकोगी नहीं राधिका –उषा प्रियंवदा–पृ0 119।